कंडों के धुएं से आर्सेनिक प्रदूषण

पश्चिम बंगाल तथा बांग्लादेश के आर्सेनिक प्रभावित क्षेत्रों में अब एक ओर समस्या पहचानी गई है। यहां के लोग ईंधन के रूप में गोबर के कंडों का उपयोग करते हैं। इससे उत्पन्न धुएं में आर्सेनिक की मात्रा सुरक्षित स्तर से कहीं अधिक पाई गई है।

कोलकाता के जादवपुर विश्वविद्यालय के पर्यावरण अध्ययन केंद्र के शोधकर्ताओं ने *जर्नल ऑफ एन्वायर्मेंट मॉनीटरिंग* में प्रकाशित अपने शोध पत्र में पश्चिम बंगाल के चौबीस परगना तथा नाडिया गांवों में किए गए अध्ययन की जानकारी देते हुए बताया है कि इस इलाके के लोग पेयजल के अलावा दूषित हवा का खतरा भी झेल रहे हैं।

प्रमुख शोधकर्ता दीपांकर चक्रबर्ती का कहना है कि इस इलाके में आर्सेनिक युक्त भूजल का उपयोग धान व सब्ज़ियों के खेतों में सिंचाई के लिए होता है। आर्सेनिक धान के पुआल में जमा हो जाता है और इस पुआल का उपयोग पशु चारे के रूप में किया जाता है। इस प्रकार से यह गोबर में पहुंच जाता है।

शोधकर्ताओं ने चौबीस परगना और नाडिया ज़िले के प्रभावित गांवों से कंडे लेकर उनके धुएं की तुलना अप्रभावित गांवों के कंडों के धुओं से की। यह देखा गया कि प्रभावित गांवों के कंडों के धुएं में आर्सेनिक विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा स्वीकृत सीमा से ज़्यादा था। गांवों के किचन में से धुएं के नमूनों की भी जांच की गई और देखा गया कि लोग, खास तौर से महिलाएं, सांस के साथ काफी मात्रा में आर्सेनिक का सेवन करते हैं। इन गांवों के किचन में आर्सेनिक की सांद्रता लगभग उतनी ही पाई गई जितनी 1970 के दशक में तांबा निष्कर्षण संयंत्रों के पास हुआ करती थी।

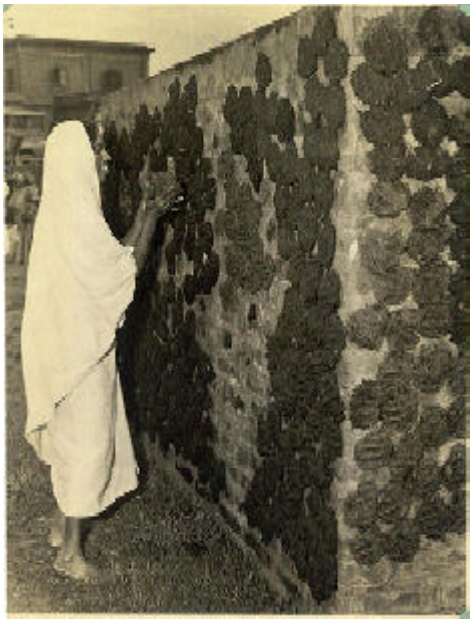

आर्सेनिक प्रदूषण के कारण फेफड़ों की कई तकलीफें पैदा होती हैं, जैसे लगातार खांसी चलना, ब्रोंकाइटिस, फेफड़ों की क्षमता में कमी वगैरह। यानी आर्सेनिक युक्त पानी पी-पीकर परेशान लोगों को साफ हवा भी मयस्सर नहीं है। किसी अन्य ईंधन के अभाव में अधिकांश लोग कंडों का उपयोग करने को मजबूर हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***